59

द्वितीय आगमन

(24:36-51)

अपने चेलों को यरूशलेम के विनाश की जानकारी देने के बाद यीशु ने उन्हें अपने द्वितीय आगमन के बारे में बताया।

"उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता" (24:36-41)

[36]"उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता। [37]जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। [38]क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहिले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उन में विवाह होते थे। [39]और जब तक जल-प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उन को कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। [40]उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। [41]दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।"

आयत 36. यरूशलेम के विनाश के विषय को छोड़ते हुए यीशु ने अपना ध्यान केवल द्वितीय आगमन की बात पर लगाया। उसने कहा, **"उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता।"** यीशु ने साफ़ कहा कि किसी व्यक्ति को मालूम नहीं है कि वह दोबारा कब आएगा या समय का अन्त कब होगा। उस तिथि की गणना करने या यह भविष्यवाणी करने की कोशिश करने वाले कि समय का अन्त आने वाला है, बेकार मेहनत करते हैं।

चाहे यीशु परमेश्वर था और सर्वज्ञ था पर उसने अन्त के समय को जानने से अपने आपको रोके रखा। यह तथ्य कि पुत्र भी अपने स्वयं के आने को नहीं जानता था, कइयों के लिए आश्चर्यचकित करने वाला हो सकता है।[1] जब "वचन देहधारी हुआ" (यूहन्ना 1:14) तो वह परमेश्वर बना रहा, परन्तु उसने अपने सर्वज्ञ होने को इस्तेमाल न करना चुना (देखें फिलिप्पियों 2:6, 7)। बड़ा होते हुए यीशु न केवल शारीरिक बल्कि बौद्धिक रूप में भी बढ़ा (लूका 2:52)। अपनी सेवकाई के आरम्भ में पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषेक किए जाने के बाद (3:16; लूका 4:18; प्रेरितों 10:38) उसने कई अवसरों पर आश्चर्यकर्म के ज्ञान का इस्तेमाल किया। परन्तु ऐसा उसने हर बार नहीं किया। रॉबर्ट एच. गुंडरी ने इसे इस प्रकार से देखा है:

जिस प्रकार यीशु ने राज्य को बढ़ाने को छोड़ अपने सर्वशक्तिशाली होने का इस्तेमाल नहीं किया (उसके पत्थरों को रोटियां बनाने से इनकार करने की बात को देखें), वैसे ही उसने राज्य को बढ़ाने को छोड़ अपने सर्वज्ञ होने का इस्तेमाल नहीं किया। उसके आने के सही-सही समय का पता होना और उसे बताना बीच के समय के दौरान लापरवाही को बढ़ावा देकर राज्य के काम को हानि पहुंचाने वाला होना था।[2]

आयतें 37-39. फिर यीशु ने **मनुष्य के पुत्र के आने** के आश्चर्य की तुलना **नूह के दिनों** में अचानक आने वाली प्रलय से करते हुए एक उदाहरण दिया। उसने **प्रलय के दिनों** से पहले तक की कुछ गतिविधियों का वर्णन यह दिखाने के लिए किया कि सामान्य जीवन बिना रोक-टोक के चल रहा था। **खाते-पीते** (निर्गमन 32:6; मत्ती 24:49) चाहे अति का संकेत दे सकता है पर यहां पर ये वाक्यांश प्रतिदिन के भोजन खाने के सम्बन्ध में है। **उनमें विवाह होते थे** यह लोगों के सामान्य जीवन का संकेत देता है (22:30 पर टिप्पणियां देखें)।

नूह ने पापी लोगों में प्रचार किया था और उनकी आंखों के सामने **जहाज़** बनाया करता था (उत्पत्ति 6:5-7; इब्रानियों 11:7; 1 पतरस 3:20; 2 पतरस 2:5), पर उन्हें ये बिल्कुल अनुमान नहीं था कि जल-प्रलय कब आने वाली थी। जीवित रहने के लिए उन्हें अपने आपको तैयार करना चाहिए था। इसके विपरीत वे अपनी जीवन शैली में लगे रहे और नूह की चेतावनियों को नज़रअन्दाज़ करते रहे **जब तक** वह जहाज **पर न चढ़ा**। जब बारिश आई और **जल-प्रलय** का पानी ऊपर उठने लगा तो बेशक उन्हें उस निर्णय पर पछतावा हुआ।

आयतें 40, 41. जब यीशु दोबारा आएगा तो जीवन वैसे ही सामान्य रूप में चल रहा होगा जैसे नूह के दिनों में था, जिसमें पुरुष और स्त्रियां अपने प्रतिदिन की गतिविधियों में लगे हुए थे। फलस्तीन के प्रतिदिन के जीवन के अनुभव से लेते हुए यीशु ने पुरुषों के **खेत में** काम करने और स्त्रियों के **चक्की पीसते** होने की बात की। **दो जनों** और **दो स्त्रियों** के सम्बन्ध में यीशु ने कहा कि एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। "ले लिया" (*paralambanō*) क्रिया शब्द को सम्भवतया उद्धार के सकारात्मक अर्थ में समझा जाए। आयत 39 में एक अलग शब्द *airō* मिलता है, जहां बुरी पीढ़ी को ले लिया गया था। नूह और उस बुरी पीढ़ी के मामले की तरह ही केवल दो प्रकार के लोग हैं, जिनमें एक तो वे हैं जो तैयार (उद्धार पाए हुए) हैं और दूसरे वे हैं जो बिना तैयारी के (खोए हुए) हैं। यीशु का आना एक पूरे और पक्के विभाजन को दर्शाता है।[3]

प्रीमिलेनियलिस्ट अर्थात हज़ार वर्ष के राज्य का विचार "रैपचर" के विचार से विशेषकर 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-17 से लिया गया है और इसका इस्तेमाल मत्ती 24:40, 41 में इससे सम्बन्धित विवरण से किया गया है। यह विचार उद्धार पाए हुओं के क्लेश के सात साल पहले प्रभु के साथ ऊपर उठाए जाने की उम्मीद करता है। परन्तु नया नियम यह नहीं सिखाता है कि परमेश्वर का इरादा केवल धर्मियों को उठाने का है (देखें 1 कुरिन्थियों 15:50-54; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-17)। वास्तव में यीशु ने घोषणा की कि दुष्टों को भी उसी समय, या उसी दिन धर्मियों की तरह ही उठा लिया जाएगा कि न्याय का सामना करो (यूहन्ना 5:25-29)।

"तैयार रहो" (24:42-51)

[42]"इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा। [43]परन्तु यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा तो जागता रहता; और अपने घर में सेंध लगने न देता। [44]इसलिए तुम भी तैयार हो, क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।

[45]अतः वह 'विश्वासयोग्य' और बुद्धिमान दास कौन हैं, जिसे स्वामी ने अपने नौकर चाकरों पर सरदार ठहराया, कि समय पर उन्हें भोजन दे? [46]धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए। [47]मैं तुम से सच कहता हूं; वह उसे अपनी सारी संपत्ति पर अधिकारी ठहराएगा। [48]परन्तु यदि वह दुष्ट दास सोचने लगे, कि मेरे स्वामी के आने में देर है। [49]और अपने साथी दासों को पीटने लगे, और पियक्कड़ों के साथ खाए पीए। [50]तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा, जब वह उसकी बाट न जोहता हो। और ऐसी घड़ी वह न जानता हो, [51]तब वह उसे भारी ताड़ना देगा, उसका भाग कपटियों के साथ ठहराएगा: वहां रोना और दांत पीसना होगा।"

आयत 42. पृथ्वी पर किसी को नहीं मालूम कि यीशु दोबारा कब **आएगा,** इस कारण **प्रभु** ने अपने चेलों को जागते रहने को कहा। जैतून के संदेश में अपनी वापसी के लिए तैयार रहने की अपने चेलों को बार-बार दी गई उसकी नसीहतें हैं (24:42, 44, 50; 25:13)। यूनानी शब्द *grēgoreō* जिसका अनुवाद "जागते रहो" हुआ है, का अनुवाद "चौकस" रहो या "सावधान रहो" भी हो सकता है। यह शब्द गतसमनी के दृश्य में मिलता है, जहां यीशु ने अपने सो रहे चेलों को जागते रहकर प्रार्थना करने को कहा था (26:38, 40, 41)।

आयत 43. अपने द्वितीय आगमन के सम्बन्ध में जागते रहने के महत्व पर यीशु ने एक उदाहरण दिया: **"परन्तु यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा तो जागता रहता; और अपने घर में सेंध लगने न देता।"** यूनानी शब्द (*oikodespotēs*) जिसका अनुवाद यहां "घर का स्वामी" हुआ है, मत्ती रचित सुसमाचार में विशेषकर दृष्टांतों में बार-बार मिलता है (10:25; 13:27; 20:1, 11; 21:33)। यह व्यक्ति घर का इंचार्ज था, जिसमें उसकी पत्नी, बच्चे और नौकर थे। यदि उसे पता होता कि चोर कब आने वाला है तो वह तैयार रहता। वह जागता रह सकता था, नौकरों को पहरे पर बिठा सकता था या अपने पड़ोसियों की सहायता ले सकता था। "किस पहर" मूलतया "[रात की] किस घड़ी में" है। घड़ियों के यहूदी सिस्टम के अनुसार रात में तीन घड़ियां होती थीं, जबकि रोमी सिस्टम में चार घड़ियां होती थीं (14:25 पर टिप्पणियां देखें)। "सेंध लगने" के लिए यूनानी शब्द (*diorussō*) का अर्थ "में खोदना" है। यह घर में घुसने के लिए गारे की ईंट वाली दीवार में से खोदने की बात दिखाता है (6:19, 20 पर टिप्पणियां देखें)। नये नियम में बाद में उसके द्वितीय आगमन की तुलना रात को आने वाले चोर से की गई है (1 थिस्सलुनीकियों 5:2, 4; 2 पतरस 3:10; प्रकाशितवाक्य 3:3; 16:15)।

आयत 44. यीशु ने इस उदाहरण का इस्तेमाल यह समझाने के लिए किया कि उसकी वापसी की कोई अग्रिम चेतावनी नहीं होगी। सब लोगों को पता चल जाएगा कि यीशु आ रहा है

पर इस द्वितीय आगमन के साथ जुड़ी घटनाएं इतनी अचानक होंगी कि किसी के लिए भी अपनी आत्मिक स्थिति को बदलने का समय नहीं होगा। उस समय या **उसी घड़ी** जब उसके आने की उम्मीद ही न हो, वह आ जाएगा।

आयतें 45-47. फिर यीशु ने पूछा, **''अतः वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन हैं, जिसे स्वामी ने अपने नौकर चाकरों पर सरदार ठहराया, कि समय पर उन्हें भोजन दे?''** उसने ध्यान घर के ''स्वामी'' (*kurios*) से हटाकर उस दास की ओर कर दिया, जिसे दूसरों को खाना देने की ज़िम्मेदारी दी गई थी। उसने अपनी ज़िम्मेदारियों के प्रति किसी दास के दो अलग-अलग व्यवहार बताए। पहले उसने ''विश्वासयोग्य और बुद्धिमान'' दास की बात की जिसने अपने भण्डारीपन के बारे में सचेत होना था। यीशु ने इस दास को जिसने अपने स्वामी के वापस आने के लिए तैयार होना था, धन्य कहा। वह अपनी ज़िम्मेदारियों में विश्वासयोग्य था, इस कारण स्वामी ने उसे **अपनी सारी सम्पत्ति पर अधिकारी** ठहरा देना था। अतिरिक्त ज़िम्मेदारियां देने का विषय तोड़ों के दृष्टांत में फिर मिलता है (25:21, 23)।

आयतें 48-51. फिर यीशु ने कहा, **''परन्तु यदि वह दुष्ट दास सोचने लगे कि मेरे स्वामी के आने में देर है''** और अपने साथी दासों को पीटने लगे, तो **स्वामी ऐसे दिन आएगा** जब उसे उम्मीद भी नहीं होगी। यह अलग-अलग परिस्थितियों में एक ही दास की बात हो सकती है। यह देखकर कि उसके स्वामी के वापस आने में देर है, यह दास अपने साथी दासों को पीटने लगा, यानी उन्हीं लोगों को जिनकी ज़िम्मेदारी उस पर दी गई! यह सुनिश्चित करने के बजाय कि उन्हें समय पर खाना मिले, वह **पियक्कड़ों के साथ** खाने-पीने लगा।

जब मालिक ने अचानक आकर इस दास के घृणा से भरे व्यवहार को देखा तो वह **उसे भारी ताड़ना देनी थी और उसका भाग कपटियों के साथ** वहां ठहर दिया जहां **रोना और दांत पीसना** है। कीनर के अनुसार राजा, पति या स्वामी के दूर देश में जाने का रूपक प्राचीन जगत के दृष्टांतों में आम इस्तेमाल किया जाता है। कई बार ये लोग अपनी पत्नियों और सेवकों की वफ़ादारी को परखने के लिए समय से पहले और बिना बताए आ जाते थे। घर के लोगों को अपने स्वामी के प्रति बेवफ़ा पाए जाने पर कठोर दण्ड दिया जाता। ''भारी ताड़ना'' में किसी को ''टुकड़े-टुकड़े'' या ''दो भाग'' करना (NKJV) प्राचीन जगत में मृत्यु दण्ड देने का आम ढंग था (1 शमूएल 15:33; 2 शमूएल 12:31; दानिय्येल 2:5; 3:29; इब्रानियों 11:37)।[5] आयत 51 की अन्तिम बात ''रोना और दांत पीसना'' मत्ती की पुस्तक में पांच और बार (8:12; 13:42, 50; 22:13; 25:30) और लूका में एक बार (लूका 13:28) मिलती है।

यह कहानी न्याय की है। यदि कोई अपने मसीही भण्डारीपन में विश्वासयोग्य है, तो उसे इनाम दिया जाएगा। यदि कोई उस भण्डारीपन में, जो उसे सौंपा गया है, अविश्वसनीय है तो उसे वहां पर दण्ड दिया जाएगा जहां ''रोना और दांत पीसना'' होगा। विश्वास योग्य भण्डारीपन में प्रभु की वापसी के लिए जागते रहना और प्रार्थना करना शामिल है।

द्वितीय आगमन (24:29-31, 36-51)

यीशु मसीह फिर आ रहा है! इस बात को हम पक्का जान सकते हैं। इसके अलावा हम जानते हैं कि उसका दूसरी बार आना उसके पहली बार के आने से नाटकीय ढंग से अलग होगा। जो हम नहीं जानते, वह उसकी वापसी का समय है।

1. *यीशु ने प्रतिज्ञा की कि वह सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ आएगा* (24:29-31)। वह आकाश के बादलों के ऊपर आएगा और बड़ी तुरही की आवाज के साथ अपने दूतों को भेजेगा और अपने चुने हुओं को इकट्ठा करेगा।

2. *उसने प्रतिज्ञा की कि जब वह आएगा तो उसका कोई चिह्न नहीं होगा* (24:36-41)। उस दिन या घड़ी को जब प्रभु दोबारा आएगा कोई नहीं जानता। उसने कहा कि उसका आना नूह के जल-प्रलय के आने की की तरह अचानक होगा।

3. *उसने प्रतिज्ञा की कि उसका आना बिना बताए और अचानक होगा* (24:42-44)। उसका आना रात को चोर के आने की तरह होगा। हमें तैयार रहना आवश्यक है क्योंकि उसका वापस आना तब होगा जब हमें विचार भी न हो कि वह आएगा।

सारांश। यीशु अपने लोगों को उसकी वापसी के लिए तैयार होने को कहता है। मत्ती 24 दो अलग-अलग दासों के दृष्टांत के साथ समाप्त होता है (24:45-51)। एक दास बड़े ध्यान से अपने फर्ज पूरा करते हुए "विश्वासयोग्य और बुद्धिमान" था। दूसरा दास साथी सेवकों को मारता-पीटता और अपने स्वामी का धन उजाड़ता हुआ "दुष्ट" था। अपनी वापसी पर स्वामी ने विश्वासयोग्य सेवक को और भी ज़िम्मेदारियां देकर ऊंचा पद दिया। परन्तु दुष्ट दास को काट डाला गया। क्या आप विश्वासयोग्य सेवक हैं, जो प्रभु की वापसी की राह देख रहा है? क्या आप यीशु के दोबारा आने से पहले उसके पास आएंगे?

यीशु वापस आ रहा है! (24:29-31, 36-51)

"आरमिगदोन की लड़ाई"! "रैपचर"! "पृथ्वी पर मसीह का हज़ार वर्ष का राज्य"! अन्त के समय की बात सुनते हुए लोगों ने ये बातें सुनी हैं। ...

आरमिगदोन की लड़ाई। प्रकाशितवाक्य में दिखाई गई अन्तिम लड़ाई आत्मिक है न कि शारीरिक। मसीह के शत्रुओं का उस पर कुछ भी वश नहीं है। वे मसीह पर और उसके सामर्थी दूतों पर प्रबल नहीं हो सकते (देखें प्रकाशितवाक्य 19)। "आरमिगदोन" शब्द "वाटरलू" और "पर्ल हार्बर" नामों की तरह ही केवल एक स्थान से कहीं बढ़कर दिखाता है। "आरमिगदोन" का सम्बन्ध बुराई के अन्तिम और अन्त में फेंके जाने से है; परन्तु प्रकाशितवाक्य में यह पहली सदी की कलीसिया के बड़े सताने वाले अर्थात रोमी साम्राज्य को निकाले जाने को दिखाता है।

रैप्चर। जहां तक कलीसिया के रैपचर की बात है, बाइबल में ऐसा कुछ नहीं है, जैसा प्रीमिलेनियस्ट लोग बताते हैं। 1 थिस्सलुनीकियों 4:14-16 में पौलुस थिस्सलुनीके के मसीही लोगों को, जिन्हें लगता था कि उनके मर चुके प्रियजन प्रभु की वापसी पर उससे नहीं मिल पाएंगे, प्रोत्साहित कर रहा था। ये आत्माएं भुलाई नहीं जानी थीं, बल्कि उन्हें हवा में प्रभु के साथ

मिलने के लिए अविनाशी देहों के साथ जिलाया जाना था।

हज़ार वर्ष का राज्य। पृथ्वी पर मसीह के हज़ार वर्ष के राज्य की क्या बात है? प्रकाशितवाक्य 20:4-6 से इस आयत को देखें कि यह ऐसा कुछ नहीं कहती। इसमें मसीह के यरूशलेम से, दाऊद के सिंहासन पर पृथ्वी पर राज करने की कोई बात नहीं है; न ही यह यह बताता है कि उसका राज कब आरम्भ होगा या खत्म होगा। यह उन शहीदों के राज की बात करता है जो कलीसिया के रोमी सताव में मारे गए: ''वे जीवित होकर मसीह के हज़ार वर्ष तक राज करते रहे'' (प्रकाशितवाक्य 20:4)। यह राज कहां हो रहा था? स्वर्ग में (प्रकाशितवाक्य 20:1)। मसीह के राज्य की अवधि कभी नहीं बताई गई; वचन केवल यह बताता है कि शहीदों ने उसके साथ कब तक राज करना था।

संसार का अंत होने वाला है, पर ''उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग दूत, और न पुत्र परन्तु केवल पिता'' (24:36)। मसीह ''चोर की नाईं'' वापस आएगा (2 पतरस 3:10)। जब वह आकाश के बादलों में वापस आएगा (वह इस पृथ्वी पर दोबारा कभी कदम नहीं रखेगा), तो यह संसार पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा (2 पतरस 3:10-12)। ये घटनाएं एक ही दिन में घटेंगी। हमारे लिए आवश्यक बात ''जागते रहना और प्रार्थना करते रहना'' (26:41) और प्रभु के आने के लिए तैयार रहना।

बाइबल हर-मगिदोन की शारीरिक लड़ाई, रैपचर, पृथ्वी पर मसीह के हज़ार वर्ष के राज्य के बारे में क्या कहती है? उत्तर है ''*कुछ नहीं!*'' बाइबल आरमिगदोन की लड़ाई की बात करती है पर यह लड़ाई भावी नबियों द्वारा बताई जाने वाली लड़ाई की तरह नहीं है (देखें प्रकाशितवाक्य 16:16; 19:11-21)। लोग आकाश में बादलों में प्रभु से मिलने के लिए ''उठा लिए'' जाएंगे परन्तु यह किसी ''बड़े क्लेश'' से पहले कलीसिया के रैपचर की बात नहीं करती (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)। मसीह के पृथ्वी पर हज़ार वर्ष के राज्य का विचार प्रकाशितवाक्य 20:4-6 की गलत व्याख्या पर आधारित है।

क्या प्रिमिलेनियलिज़्म की शिक्षा सही है? (24:29-31, 36-51)

यह शिक्षा कि यीशु पृथ्वी पर वापस आकर यरूशलेम में सांसारिक राज्य स्थापित करेगा कई कारणों से बाइबल की शिक्षा को हानि पहुंचा रही है। आइए उन कुछ कारणों की समीक्षा करते हैं कि इस अवधारणा को क्यों नकारा जाना चाहिए।

1. यह इस बात का इनकार करती है कि मसीह ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अपने राज्य को बनाया। प्रिमिलेनियलिज़्म की शिक्षा है (1) कि वह अपने राज्य को स्थापित करने के अपने मिशन में नाकाम रहा और (2) कि कलीसिया जल्दबाजी में बनाया गया राज्य से कम महत्व का विकल्प था। बाइबल इसके विपरीत सिखाती है (प्रेरितों 2:36; 1 कुरिन्थियों 15:24-26; इफिसियों 1:20-23; कुलुस्सियों 1:13; इब्रानियों 12:28; प्रकाशितवाक्य 1:9)।

2. यह शिक्षा परमेश्वर और मसीह को झूठी शिक्षा देने वाले बना देती है (दानिय्येल 2:44; मरकुस 9:1; प्रेरितों 1:6-8)।

3. यह वही गलती करती है, जो यीशु के समय के यहूदियों ने की थी। वे सांसारिक

राज्य की उम्मीद लगाए बैठे थे। यीशु ने साफ़ कहा, ''मेरा राज्य इस जगत का नहीं'' (यूहन्ना 18:36)।

4. यह शिक्षा लोगों को पृथ्वी पर मसीह के हज़ार वर्ष के राज्य के दौरान परमेश्वर की आज्ञा मानने के दूसरे अवसर पर झूठी उम्मीद देती है।

5. यह शिक्षा बाइबल की भविष्यवाणी का दुरुपयोग करती है, प्रतीकों की व्याख्या शाब्दिक ढंग से करके प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को गलत बनाती है और पूरी हुई भविष्यवाणियों के बारे में लोगों के मनों में संदेह डालती है।

टिप्पणियां

[1]''न पुत्र'' वाक्यांश मत्ती की कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में मिटा हुआ है, जिसकी अधिक सम्भावना धर्मशास्त्रीय कठिनाई के कारण है। परन्तु मरकुस 13:32 में यह निर्विवाद है। (ब्रूस एम. मैज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. [स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994], 51-52.) [2]रॉबर्ट एच. गुंडरी, *मैथ्यू: ए कमैंट्री ऑन हिज़ लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 492. [3]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 615. [4]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 594-95. [5]होमेर *ओडिसि,* 18.339; लाइवी 8.24.14; डायोडोरस साइकुलुस 16.16.4; 17.83.9; 33.15.1; हेरोदोतस 2.139; 7.39.